प्रा. डॉ. जाधव मोहन पुंडलिक
एम्.ए., बी.एड., पीएच्.डी.
अधिव्याखाता, हिंदी विभाग
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा,
तथा
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोधनिर्देशक

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री केदार सुनिता बलभिम ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए ''मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ ('वंशज' और 'मैं और मैं' के विशेष संदर्भ में)'' लघु – शोध – प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। जो तथ्य इस लघु – शोध – प्रबंध में प्रस्तुत किए गए है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट होकर ही इसे परिक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ। प्रस्तुत लघु – शोध – प्रबंध इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधिके लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोध निर्देशक

(डॉ. जाधव मोहन पुंडलिक)

प्रा. डॉ. मोहन पी. जाधव
हिंदी विभाग,
छ. शिवाजी कॉलेज,
कॅम्प-सातारा-४१५ ००१.

स्थान – सातारा
तिथि – 30/4/2010

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि, सु.श्री. **केदार सुनिता बलभिम** का एम्. फिल. (हिंदी) का लघु – शोध – प्रबंध ''**मृदुला गर्ग के उपन्यासो में चित्रित समस्याएँ ('वंशज' और 'मैं और मैं' के विशेष संदर्भ में)**'' परिक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE
SATARA

DR. B. D. SAGARE
M.A., M.Phil., Ph.D.
Research Guide
Deptt. of Hindi
L.B.S. College, SATARA

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे

स्थान – सातारा
तिथि – 30/4/2010

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करती हूँ कि, ''**मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ ('वंशज' और 'मैं और मैं' के विशेष संदर्भ में)**'' लघु - शोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत लघु - शोध - प्रबंध इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोध - छात्रा

Kedar

(सु श्री केदार सुनिता बलभिम)

स्थान - सातारा
तिथि - 30/4/2010

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन :

हिंदी साहित्य जगत में अनेक विधाओं को लेकर रचनाएँ लिखी गयी है। कहानी, नाटक, निबंध, एकांकी, उपन्यास आदि गद्य की प्रमुख विधाएँ मानी जाती है। हिंदी साहित्य के प्रति मेरा आकर्षण तब बढ़ा जब मैं स्नातकोत्तर के द्विवितीय वर्ष में पढ़ रही थी। यह रूचि बढ़ने का कारण डॉ. सुरैया शेख का अध्यापन करने का ढंग मुझे बहुत अच्छा लगा था। डॉ. शेख मॅडमजी मा. ह. महाडिक महाविद्यालय में उसी वक्त आयी थी जब हमने स्नातकोत्तर उपाधि के लिए प्रवेश लिया। इन्होंने ही मेरी पढ़ाई का रूख मोड़ लिया।

एम्. फिल. की प्रवेश परिक्षा के बाद मेरा प्रवेश लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय में हुआ। वहाँ की मुझे कोई जानकारी नहीं थी। तब मुझे डॉ. जाधव जी से वहाँ की जानकारी हासिल हुई। प्रवेश के बाद लघु – शोध – प्रबंध को लेकर और मार्गदर्शक के चुनने के सवालों ने मुझे बहुत बेचैन किया। तब मुझे सातारा के छत्रपति शिवाजी महाविद्यालय के प्रा. डॉ. जाधव मोहन पुंडलिक मिले। उनसे मेरी बातचित हुई। जब मैं उन्हें पहली बार मिली। तब उन्होंने मुझे मृदुल गर्ग के दो उपन्यास 'वंशज' और 'मैं और मैं' पढने को दिए। इन उपन्यासों को पढ़ने के बाद विषय, संवाद और पात्र तथा शैलियों ने मुझे आकर्षित कर लिया। मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य जगत् की अद्वितीय साहित्यकारों में से एक है। वह प्रमुखत: साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में प्रसिद्ध है। तब मेरे मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि क्यों न मैं मृदुलाजी के उपन्यासों पर विशेषत: 'वंशज' और 'मैं और मैं' पर लघु – शोध कार्य करूँ। इस तरह मेरे गुरूवर्य मेरे मार्गदर्शक डॉ. मोहन पुंडलिक जाधव जीसे विचार विमर्श के बाद शोध – प्रबंध के लिए ''मृदुला गर्ग के उपन्यासों मे चित्रित समस्याएँ ('वंशज' और मैं और मैं' के विशेष संदर्भ में)'' इस विषय का चयन किया।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

मृदुला गर्ग के उपन्यासों को पढ़ने के पश्चात मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उभरकर आए

१) मृदुला गर्ग का जीवन किस तरह बीता ? उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ कौनसी है ?

२) मृदुला जी की रचनाएँ कौनसी है ?

३) मृदुला जी के उपन्यासों का कथ्य क्या है ?

४) विवेच्य उपन्यास में मृदुलाजी ने नारी के किन रूपों को चित्रित किया है ?

५) विवेच्य उपन्यास में चित्रित समस्याएँ कौनसी है ? क्या उनका समाधान उसमें मिलता है ?

६) मृदुला के उपन्यासों की भाषाशैली कैसी है ?

७) मृदुलाजीने अपने उपन्यासोंमें किन समस्याओं का चित्रण किया है ?

८) मृदुलाजी इन उपन्यासों के जरिए क्या संदेश देना चाहती है ?

९) समकालीन उपन्यास के विकासमें मृदुलाजीका क्या योगदान रहा है ?

विवेच्य उपन्यासों के अनुशीलन के पश्चात मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए। उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघुशोध - प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध के विषय का विवेचन विश्लेषण किया है।

लघुशोध - प्रबंध की सीमा एवं व्याप्ति :

हर लघुशोध - प्रबंध की सीमा एवं व्याप्ति होती है। इसी के आधारपर शोध - कार्य सरलता से संपन्न हो पाता है। अध्ययन सरल एवं सुविधा जनक होने के हेतु मैंने प्रस्तुत अध्यायों को विभाजित कर लघु शोध - प्रबंध प्रस्तुत करने की कोशिश की है -

प्रथम अध्याय : ''मृदुला गर्ग का जीवनवृत्त एवं साहित्य – परिचय''

साहित्यकार जिस वातावरण में रहता हैं, जो संघर्ष वह अपने जीवन में करता है, अनुभव लेता है, उसी की अभिव्यक्ति वह सर्जनशील कल्पना के द्वारा करता है। इसलिए किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के लिए उसके जीवन में आए संघर्ष का परिचय पाना आवश्यक है। इसलिए इस अध्याय में मृदुलाजी के जीवनवृत्त एवं साहित्य का परिचय दिया जाएगा। जिसमें

प्रस्तावना

१.१. जीवनवृत्त।

- १.१.१ जन्म
- १.१.२ बचपन
- १.१.३ शिक्षा
- १.१.४ माता – पिता
- १.१.५ विवाह का वैवाहिक जीवन
- १.१.६ परिवार
- १.१.७ साहित्यिक माहौल

१.२. मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

- १.२.१ बाह्य व्यक्तित्व
- १.२.२ आंतरिक व्यक्तित्व
- १.२.३ कलाप्रिय
- १.२.४ सौंदर्य प्रिय
- १.२.५ घुमक्कडी वृत्ति
- १.२.६ बागवानी का शौक

१.२.७ संवेदनशील

१.२.८ विभिन्न रचनाकारोंसे प्रभावित

१.३. मृदुलाजीके साहित्य का संक्षिप्त परिचय

१.३.१ कहानीकार मृदुला

१.३.२ उपन्यासकार मृदुला

१.३.३ अन्य गद्य कृतियाँ

१.३.४ लेख संग्रह

१.३.५ संस्मरण

१.३.६ अनुवाद साहित्य

१.३.७ पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय – ''मृदुलजीके उपन्यास साहित्य का कथ्य''

प्रस्तावना

२.१. कथावस्तु का अर्थ

२.१.१ कथावस्तु का स्वरूप

२.२ विवेच्य उपन्यासोंकी कथावस्तु का अनुशीलन

२.२.१ 'वंशज' की कथावस्तु

निष्कर्ष

२.३ 'मैं और मैं' उपन्यास की कथावस्तु

२.३.१ विवेच्य उपन्यासों में पात्रों की मनोदशा का अंकन

२.३.१.१ अंतर्द्वंद्व

२.३.१.२ अहम्

२.३.१.३ दमन

२.३.१.४ कुंठा

२.३.१.५ मनोग्रंथियाँ

२.३.१.५.१ हीनता

२.३.१.२ परपीड़न

२.३.१.५.३ आत्म पीड़न

२.३.१.५.४ काम

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय – ''समस्या – स्वरूप विवेचन''

प्रस्तावना

३.१ समस्या का अर्थ

३.२ समस्या की परिभाषा

३.३ समस्या का स्वरूप, व्याप्ति

३.४ समस्याओं के प्रकार

३.५ समस्या और साहित्य का संबंध

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : ''विवेच्य उनन्यासों में चित्रित समस्याएँ''

प्रस्तावना

४.१ सामाजिक समस्याएँ

४.१.१ शोषण की समस्या

४.१.२ मद्यपान की समस्या

४.१.३ विश्वासघात की समस्या

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

४.१.४ गर्भपात की समस्या

४.१.५ बालविवाह की समस्या

४.१.६ बालमजदुरी की समस्या

४.१.७ अंधविश्वास की समस्या

४.१.८ वेश्या की समस्या

४.१.९ बालअपराध की समस्या

४.२ धार्मिक समस्याएँ

४.२.१ सांप्रदायिकता की समस्या

४.२.२ जाति – पाँति की समस्या

४.२.३ अस्पृश्यता की समस्या

४.३ आर्थिक समस्याएँ

४.३.१ बेरोजगारी की समस्या

४.३.२ अर्थाभाव की समस्या

४.४ शिक्षा की समस्याएँ

४.५ नारी समस्याएँ

४.५.१ शोषण की समस्या

४.५.२ भेदभाव की समस्या

४.५.३ बलात्कार की समस्या

४.५.४ वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या

४.६ पारिवारिक समस्याएँ

४.६.१ अकेलेपन की समस्या

४.६.२ पिता – पुत्र में वैचारिक संघर्ष

४.६.३ प्यार पाने की लालसा

निष्कर्ष

पंचम अध्याय : ''समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य के विकास में मृदुला गर्ग का योगदान''

प्रस्तावना

५.१ साठोत्तरी हिंदी उपन्यास के विकास में महिला उपन्यासकारोंका योगदान।

५.२ हिंदी उपन्यास साहित्य के विकास में मृदुला गर्गका योगदान।

निष्कर्ष।

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

***

अमूल्यसाथ

प्रस्तुत लघुशोध – प्रबंध के लेखन कार्य में जिन विद्वानों तथा हितचिंतकोंने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में मुझे सहयोग दिया, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना प्रधान कर्तव्य समझती हूँ।

सर्वप्रथम उन सभी लेखक – लेखिकाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनकी रचनाओंका प्रयोग मैंने संदर्भ ग्रंथ के रूप में किया है।

प्रस्तुत लघु शोध – प्रबंध – निर्देशक श्रद्धेय गुरु डॉ. जाधवसरजी प्रवक्ता, हिंदी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के पथ – निर्देशन का फल है। एम्. फिल. उपाधि के लिए शोध – निर्देशक के रूप में मुझे उन्होंने बहुत अच्छा मार्गदर्शन किया। आपसे मुझे हमेशा प्रेम, प्रेरणा तथा उचित मार्गदर्शन मिलता रहा है। इसी कारण मेरा एम्. फिल. का शोध कार्य आसानी से पूर्ण हुआ। मैं आप तथा आपके परिवारजनों के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। साथ ही आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पद्मा पाटीलजी, हिंदी विभागाध्यक्ष, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, डॉ. भारत सगरे, लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज, सातारा, जयंत जाधव, सातारा आदिका सहयोग तथा मार्गदर्शन समय – समयपर मिलता रहा। अत: उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मेरे लिए अपार कष्ट उठानेवाले मेरी माताजी सौ. शालन केदार और पिताजी श्री. बलभिम केदार मेरे भैया – भाभी, मेरे पति श्री. शशिकांत सावंत का आशिर्वाद मुझे सदैव सत्कार्य के लिए प्रेरणा देता रहा है। मैं अजन्म उनके ऋण में रहूँगी। साथही परिवार के ससुर, सास, देवर आदि का आशिर्वाद मेरे लिए सदैव प्रेरणादायी रहा है। मैं उनकी आजीवन ऋणी हूँ।

मेरे लघु शोध – प्रबंध की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूपमें जिन मित्र परिवार का सहयोग मिला उनमें अनिता, पूनम, मैना, सुजाता आदिका इस लघु शोध – प्रबंध में प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ। अत: मैं इन सबकी ऋणी हूँ।

संदर्भ ग्रंथो के बिना तो कोई भी लघु शोध – प्रबंध पूरा नही होता। अत: मैं लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के, छत्रपति शिवाजी ग्रंथालय, सातारा के ग्रंथपाल और सभी कर्मचारियों के प्रति दिलसे कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इस प्रबंध के संगणक टंकन अत्यंत सुचारू रूप से करनेवाले में, सुनील झेरॉक्स, बार्शी के श्री. सुनील शेटे ने अत्यंत तत्परता के साथ करके शोध – प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया है। अत: मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

साथ ही जिन ज्ञात अज्ञात तथा परिचित अपरिचितों की शुभ कामनाएँ एवं आशीर्वचन मुझे प्राप्त हुए है उन सबके प्रति मैं आत्मीयतापूर्व भाव से कृतज्ञता प्रकट करते हुए लघु शोध – प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध – छात्रा

Kedar

(सुश्री. केदार सुनिता बलभिम)

स्थान – सातारा

तिथि – 30/4/2010

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

विषय - सूची

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
	प्रमाणपत्र	(एक)
	अनुशंसा	(दो)
	प्रख्यापन	(तीन)
	प्राक्कथन	(चार)
	अमूल्य साथ	(दस)
	विषय सूची	(बारह)
प्रथम अध्याय	''मृदुल गर्ग का जीवनवृत्त एवं साहित्य - परिचय''	1-11
	प्रस्तावना	
१.१	मृदुला गर्ग का जीवनवृत्त	
१.१.१	जन्म	
१.१.२	बचपन	
१.१.३	शिक्षा	
१.१.४	माता - पिता	
१.१.५	विवाह या वैवाहिक जीवन	
१.१.६	परिवार	
१.१.७	साहित्यिक माहौल	
१.२	मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व की विशेषताएँ	
१.२.१	बाह्य व्यक्तित्व	
१.२.२	आंतरिक व्यक्तित्व	
१.२.३	कलाप्रिय	
१.२.४	सौंदर्य प्रिय	
१.२.५	घुमक्कडी वृत्ति	
१.२.६	बागवानी का शौक	
१.२.७	संवेदनशील	
१.२.८	विभिन्न रचानाकारोंसे प्रभावित	

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

१.३ **मृदुलाजीके साहित्य का संक्षिप्त परिचय**
१.३.१ कहानीकार मृदुला
१.३.२ उपन्यासकार मृदुला
१.४ **अन्य गद्य कृतियाँ**
१.५ **लेख – संग्रह**
१.६ **संस्मरण**
१.७ **अनुवाद साहित्य**
१.८ **पुरस्कार एवं सम्मान**
निष्कर्ष
द्वितीय अध्याय ''मृदुलाजी के उपन्यास साहित्य का कथ्य'' 12-33
प्रस्तावना
२.१ **कथावस्तु का अर्थ**
२.१.१ कथावस्तु का स्वरूप
२.१.२ विवेच्य उपन्यासोंकी कथावस्तु का अनुशीलन
२.१.३ 'वंशज' की कथावस्तु
निष्कर्ष
२.२ **'मैं और मैं' उपन्यास की कथावस्तू**
२.२.१ विवेच्य उपन्यासों में पात्रों की मनोदशा का अंकन
२.२.१.१. अंर्तद्वंद्वं
२.२.१.२ अहम्
२.२.१.३ दमन
२.२.१.४ कुंठा
२.२.१.५ मनोग्रंथियाँ
२.२.१.५.१ हीनता
२.२.१.५.२ परपीड़न
२.२.१.५.३ आत्मपीड़न
२.२.१.५.४ काम
२.२.२ निष्कर्ष

तृतीय अध्याय	''समस्या स्वरूप विवेचन''	३४-४०
	प्रस्तावना	
३.१	समस्या का अर्थ	
३.२	समस्या की परिभाषा	
३.३	समस्या का स्वरूप, व्याप्ति	
३.४	समस्याओं के प्रकार	
३.५	समस्या और साहित्य का संबंध	
	निष्कर्ष	
चतुर्थ अध्याय	''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ''	४१-१०१
	प्रस्तावना	
४.१	सामाजिक समस्याएँ	
४.१.१	शोषण समस्या	
४.१.२	मद्यपान समस्या	
४.१.३	विश्वासघात समस्या	
४.१.४	गर्भपात समस्या	
४.१.५	बालविवाह समस्या	
४.१.६	बालमजदूरी समस्या	
४.१.७	अंधविश्वास समस्या	
४.१.८	वेश्या समस्या	
४.१.९	बाल अपराध समस्या	
४.२	धार्मिक समस्याएँ	
४.२.१	सांप्रदायिकता की समस्या	
४.२.२	जाति – पाँति की समस्या	
४.२.३	अस्पृश्यता की समस्या	
४.३	आर्थिक समस्याएँ	
४.३.१	बेरोजगारी की समस्या	
४.३.२	अर्थाभाव की समस्या	

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

४.४ **शिक्षा की समस्याएँ**

४.५ **नारी समस्याएँ**

४.५.१ शोषण की समस्या

४.५.२ भेदभाव की समस्या

४.५.३ बलात्कार की समस्या

४.५.४ वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या

४.६ **पारिवारिक समस्या**

४.६.१ अकेलेपन की समस्या

४.६.२ पिता – पुत्र में वैचारिक संघर्ष

४.६.३ प्यार पाने की लालसा

निष्कर्ष

पंचम अध्याय **''समकालीन हिंदी उपन्यास के विकास में मृदुला गर्ग का योगदान''** १०२ - १२८

प्रस्तावना

५.१ **साठोत्तरी हिंदी उपन्यास के विकास में महिला उपन्यासकारों का योगदान**

५.२ **हिंदी उपन्यास साहित्य के विकास में मृदुला गर्ग का योगदान**

निष्कर्ष

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची